युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह

18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2021

श्रीगोरखनाथ मन्दिर में युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की श्रद्धांजलि

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 23 सितम्बर। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 52वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की श्रद्धान्जलि सभा की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का गोरखपुर में आगमन देव योग से हुआ। उनका जन्म ऐतिहासिक मेवाड़ वंश में हुआ था। उनका गोरक्षपीठ को मिला मार्गदर्शन व उनका कृतित्व हम महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के रूप में देख रहे हैं। स्वाभाविक रूप से उन्होने न केवल धार्मिक-आध्यात्मिक अपितु शैक्षिक व स्वास्थ्य से सम्बन्धित संस्थाओ की स्थापना करके पूरे पूर्वांचल के साथ देश को आदर्श नागरिक देने का कार्य किया और इसी कड़ी को मेरे पूज्य गुरूदेव राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने और आगे बढ़ाया। इस देश की संस्कृति, संस्कृत और संस्कारों की संस्कृति है। इसको अनुभव करते हुए महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने संस्कृत विद्यालयों की स्थापना की। आज उत्तर प्रदेश सरकार संस्कृत व संस्कृति के संरक्षण के साथ ही गो-संरक्षण के लिए प्रयास कर रही है। गो-वंश के संरक्षण व संस्कृत संरक्षण के लिए सरकार ने मठ-मन्दिरों का आह्वान किया है कि सरकार के साथ सभी का योगदान होने पर यह कार्य अपने लक्ष्य को पूरा करेगा। जिन विसंगतियों के कारण देश का विभाजन हुआ, जिन मूल्यों के पतन होने से हिन्दु संस्कृति में गिरावट हुई। उन सभी विसंगतियों के लिए पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी व पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी ने अनेक प्रयास किये। आज उनके पुण्यतिथि के अवसर पर महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सभी संस्थाओं के तरफ से हम सभी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने राष्ट्रधर्म को सभी धर्मो से ऊपर माना। उन्होंने माना कि भारत को यदि भारत बने रहना है तो इसकी कुन्जी सनातन हिन्दू धर्म एवं संस्कृति में है। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज आनन्दमठ की सन्यासी परम्परा के वे साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भी तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने का आरोप लगा। चैरी-चैरा काण्ड में महन्त दिग्विजयनाथ जी को आरोपित किया गया। ये घटनायें इस बात की प्रमाण है कि गोरक्षपीठ ने उस सन्यासी परम्परा का अनुशरण किया जो मानती रही है जो राष्ट्रधर्म ही हमारा धर्म है। राष्ट्र की रक्षा भी सन्यासी का प्रथम कर्तव्य है। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों द्वारा प्रारम्भ की गई यह परम्परा आगे भी निरन्तर चलती रहेगी। श्रीगोरक्षपीठ द्वारा संचालित सभी संस्थायें जहा ँ भी जो भी अच्छा हो उसके साथ खड़ी हो और उसके साथ चलें। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना का पूरा श्रेय महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को है। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की पहल और उनके अहर्निश प्रयत्न से ही गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना हो सकी। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने यदि अपने दो महाविद्यालयों सहित पूरी सम्पत्ति विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु दान न की होती तो गोरखपुर में विश्वविद्यालय की सपना अधूरा रहता। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने महन्त जी के निर्देशन पर अपना पूरा योगदान दिया और आज गोरखपुर उच्च शिक्षा का एक प्रतिष्ठित केन्द्र बना हुआ है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् तबसे अबतक गोरखपुर विश्वविद्यालय को अपनी संस्थाओं की तरह ही संरक्षित एवं सवंर्धित करती रही है।

उन्होनें कहा कि हमारे पूर्व के पीठाधीश्वरों में यह स्पष्ट संदेश दिया है कि व्यक्तिगत धर्म से राष्ट्रधर्म बड़ा है। यदि व्यक्ति का विकास चाहिए तो राष्ट्र का विकास उसकी अनिवार्य शर्त है। समर्थ भारत और समृद्धि की पूरी परिकल्पना भारत के संविधान में निहित है। भारत के अनेक मनीषियों एवं बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने भारत का जो संविधान हमें दिया है वह उसी भारत के निर्माण का आधार है जैसा भारत हम चाहते है। भारत की ऋषि परम्परा एवं भारत के संत परम्परा ने जिस भारत की परिकल्पना प्रस्तुत की है उसे हमे भारत के संविधान में देख सकते है। भारतीय संस्कृति में छुआछूत, ऊँचनीच जैसी किसी

भेदभाव को स्थान प्राप्त नही है और यही बात भारत का संविधान भी कहता है। श्रीगोरखनाथ मन्दिर में सभी पंथों के योगी-महात्मा रहते है। दोनों ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज ने हिन्दुत्व को ही श्रीगोरखनाथ मन्दिर का वैचारिक अधिष्ठान बनाया।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा कि वर्तमान युग में साधु-सन्तों को मठ-मन्दिरों से बाहर निकालकर देश और समाज के लिए काम करने का मार्ग इस पीठ ने दिखाया। मोदी-योगी देश के विकास पुरूष है। ये दो व्यक्ति नही बल्कि राष्ट्र के वैचारिक अधिष्ठान के प्रतिकूल है। इस पीठ के पीठाधीश्वरों को जन और धन का जीतना व्यापक समर्थन मिला उतना शायद ही किसी पीठ को मिला हो। लेकिन उस व्यापक जन समर्थन को इस पीठ ने राष्ट्र और समाज के हित में समर्पित कर दिया। इस पीठ के पीठाधीश्वर आध्यामिक परम्परा एंव ऊर्जा के प्रतिनिधि हैं। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज इसी परम्परा के निर्माणकर्ता है। दिग्विजयनाथ जी को महाराणा प्रताप का वंशज बताते हुए कहा कि राष्ट्रहित में दिग्विजयनाथ जी महाराणा प्रताप जी की तरह ही सोचते थे।

उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज राष्ट्र के उन नायकों में से हैं जिन्होंने न केवल अध्यात्मिक क्षेत्र से भारत को उन्नत किया अपितु भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपनी महती भूमिका निभाई। इनके अन्दर सिद्धान्त के प्रति जबरदस्त आक्रामकता दिखती थी। कभी भी सिद्धान्तों के प्रति इन्होंने समझौता नहीं किया। राष्ट्र संत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सैद्धान्तिक विनयशीलता के प्रतिमूर्ति थे। किसी भी प्रकार की समस्या लेकर जो भी व्यक्ति उनके पास आता था वे उसकी समस्या का बिना किसी भेद-भाव के त्वरित निदान करते थे। यह एक सन्त ही कर सकता है। दोनों ब्रह्मलीन महाराज को सच्ची श्रद्धांजलि उनके वैचारिक अभियान को निरन्तर बढ़ाते रहना ही है।

अरैल प्रयागराज से पधारे स्वामी गोपाल जी महाराज ने कहा कि स्वतंत्रता संघर्ष में आध्यात्मिक शक्ति का जागरण करने में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रहीं है। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का आह्वान राष्ट्रधर्म बन गया। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद के साथ इस पीठ के पीठाधीश्वरों ने कभी समझौता नही किया। पीठाधीश्वरों के शरीर बदले, किन्तु प्राण और आत्मा वहीं रही। परिणामतः महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज और अब उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज प्रखर राष्ट्रवाद के ध्वजवाहक बनें। इस

पीठ के भी वैचारिक अधिष्ठान को विचलित करने के अनेक प्रयत्न हुए। सत्ता के इस षड्यंत्रों को इस पीठ ने डटकर सामना किया और भारत कि उस सन्यासी परम्परा को आगे बढ़ाया जो अपने वैचारिक अधिष्ठान के लिए ही जीती-मरती है। योगी आदित्यनाथ जी महाराज जिस तरह से अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के लिए दिन-रात काम कर रहे है निश्चित रूप से महन्त अवेद्यनाथ जी द्वारा दिये गये संस्कारों का ही परिणाम है। आज पूरा उत्तर प्रदेश अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहा है। योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किये गये कार्य दोनों ब्रह्मलीन महाराज के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अयोध्याधाम से पधारे जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी महाराज ने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी ने राजनीति को धर्म के खुटें से बाँधा। महन्त दिग्विजयनाथ जी, महन्त अवेद्यनाथ जी एवं महन्त योगी आदित्यनाथ जी वैश्विक क्षितिज पर राजनीति और धर्म के द्वन्द्व के उत्तर हैं। दुनियां के राजनीति इतिहास में इस पीठ ने उस विशिष्ट परम्परा को प्रतिष्ठित किया है जो धर्म और राजनीति को सिक्के का एक पहलू मानती है। जो परम्परा राजनीति को भी लोक कल्याण का साधन मानती है। भारत की इस सनातन परम्परा के वैचारिक अधिष्ठान को इस पीठ ने वर्तमान युग में व्यवहारिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। मध्य युग से लेकर भारत के स्वतंत्रता संग्राम तक व्याप्त धर्म, राष्ट्र और राजनीति को एक साथ साधने का प्रयत्न करने वाले ऋषियों की एक लम्बी परम्परा है। किन्तु वह परम्परा वर्तमान युग में आकर श्रीगोरक्षपीठ में आकार पाती है। इस मठ के पीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ आज राजनीति और धर्म के एकाकार होने के यदि प्रतिमान बने हैं तो उसका श्रेय युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त महन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उन दृढ़ संकल्पों को जाता है जहां उन्होंने राष्ट्रधर्म को ही धर्म माना।

रोहतक हरियाणा से पधारे अलवर राजस्थान से सांसद महन्त बालकनाथ जी महाराज ने कहा कि गोरक्षपीठ की यह श्रद्धांजलि सभा इसलिये विशिष्ट है कि संसद और विधान सभाओं में राष्ट्र और समाज से सम्बन्धित जिन महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा नही हो पाती वह विषय इस श्रद्धांजलि सभा में विचार किये जाते है। उन्होंने कहा कि युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का नाम आते ही गोरखपुर का विकास दिखता है। मदन मोदन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज, गोरखपुर

विश्वविद्यालय, पालीटेक्निक, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाएँ दिखाई देती है। हिन्दुत्व का मानसम्मान दिखता है। राष्ट्र पर मर-मिटने वालों की फौज खड़ा करने का जज्बा दिखता है। भारत-नेपाल सम्बन्धों की मिठास दिखती है। ऐसे युगपुरुष को ही देश और समाज याद करता है।

जूना अखाड़ा गाजियाबाद महन्त श्री नारायण गिरि जी ने कहा कि शिक्षा, चिकित्सा एवं सेवा के क्षेत्र में श्रीगोरक्षपीठ ने जो प्रतिमान खड़ा किया है वह पूरे देश में कहीं दिखाई नही पड़ता। धर्म, आध्यात्म और राष्ट्रीयता को एकसाथ जोड़कर शिक्षा और सेवा के माध्यम से इस लक्ष्य को पूरा करने का सुनियोजित प्रयत्न महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने प्रारम्भ किया था। लगातार तीन पीढ़ी तक शिक्षा, चिकित्सा एवं सेवा का जो प्रभावपूर्ण ढांचा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने खड़ा किया है इसकी दूरदृष्टि महन्त दिग्विजयनाथ महाराज जी ने दी थी। गोरक्षपीठ ने ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के समय से ही धर्म के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं सामाजिक मुद्दों पर हिन्दू समाज का नेतृत्व किया है। उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में उस परम्परा का पूरी तरह से निर्वहन किया। परिणामतः गोरक्षपीठ को देश की जनता का समर्थन प्राप्त हैं। ये दोनों महापुरूष हिन्दू समाज रूपी आकाश में ध्रुव के समान प्रकाशमान नक्षत्र थे। इनके विचार आज भी प्रासंगिक है।

स्वामी विश्वेश प्रपन्नाचार्य जी महाराज ने कहा कि ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ महाराज जी एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हमारे प्रेरणास्रोत है। पूज्य ब्रह्मलीन दोनों महन्त जी महाराज केवल समाज के लिए नहीं धर्माचार्यो के लिए भी एक आदर्श है। नाथ सम्प्रदाय के होते हुये भी पंथ अथवा अपने सम्प्रदाय से उपर उठकर उन्होंने हिन्दुत्व के लिए कार्य किया और राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की धुरी बने। पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में दोनो महाराज जी का योगदान अद्धितीय है।

जूनागढ़ गुजरात से पधारे महन्त शेरनाथ जी महाराज ने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एक क्रान्तिकारी थे। उन्होंने भारत की आजादी के संघर्ष में आधात्मिक पुट दिया। वे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे। जब देश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को स्वीकार करने अथवा उस पर स्पष्ट मत रखने में शासन सत्ता

संकोच कर रही थी, उन्होंने इस बात की स्पष्ट घोषणा की कि हिन्दुत्व ही भारत की राष्ट्रीयता है। भारत का विकास हिन्दुत्व के वैचारिक अधिष्ठान पर ही सम्भव है। आजाद भारत का पुनर्निमार्ण उसकी संास्कृतिक विरासत पर ही करना होगा तभी स्वाभिमानी, स्वावलम्बी और सम्प्रव भारत खड़ा होगा। उन्होंने ज्ञान को कर्म में ढालने और कर्म को ज्ञान में ढालने की वह अद्भुत परम्परा प्रारम्भ की जिसे उनके उत्तराधिकारी पीठाधीश्वरों ने लोक मत का परिष्कार कर लोक जागरण कर भारत में जन-जन तक पहुॅचाया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा जनअभियान चलाकर महन्त दिग्विजयनाथ जी के वैचारिक अधिष्ठान को जनान्दोलन बना दिया गया और महन्त योगी आदित्यनाथ आज उसी जनान्दोलन के प्रतिफल है। धारा 370 और 35 ए हटाकर केन्द्र की मोदी सरकार ने देश को एक करने में बड़ा काम किया है यह दोनों पूज्य महाराज जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं द्वारा श्रद्धांजलि के क्रम में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गुरु श्री गोरखनाथ चिकित्सालय व गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज गोरखपुर की तरफ से मेजर जनरल डॉ0 अतुल कुमार बाजपेई, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिविल लाइन तथा दिग्विजयनाथ महिला छात्रावास की तरफ डॉक्टर वीणा गोपाल मिश्रा, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, योगिराज बाबा गंभीरनाथ सेवाआश्रम, योगीराज बाबा गंभीर नाथ निशुल्क सिलाई कढ़ाई केंद्र व महंत अवैधनाथ निशुल्क प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व महंत दिग्विजय नाथ निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र जंगल धूषण से डॉ विजय कुमार चैधरी, महाराणा प्रताप महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामदत्तपुर की तरफ से डॉ बबिता सिंह, गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज आफ नर्सिंग एवं गुरु श्री गोरक्षनाथ स्कूल आफ नर्सिंग की तरफ से कुमारी सोनिया ,दिग्विजय नाथ एल टी प्रशिक्षण महाविद्यालय गोरखपुर की तरफ से सुनील केसरवानी, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यालय मैदागिन वाराणसी ,श्री गोरखनाथ संस्कृत छात्रावास गोरखनाथ मंदिर, श्री गोरखनाथ संस्कृत उत्तर माध्यमिक विद्यालय गोरखनाथ मंदिर की तरफ से डॉ

अरविंद कुमार चतुर्वेदी, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज गोलघर से श्री आलोक प्रताप सिंह, महाराणा प्रताप बालिका इंटर कॉलेज सिविल लाइन, महाराणा प्रताप टेलरिंग स्कूल सिविल लाइन व महाराणा प्रताप चिल्ड्रन एकैडमी सिविल लाइन की तरफ से कृष्णा चटर्जी, महाराणा प्रताप सीनियर सेकेंडरी स्कूल बेतियाहाता से रंजना सिंह,महाराणा प्रताप कन्या इंटर कॉलेज रामदत्तपुर से पूनम सिंह,महाराणा प्रताप कृषक इंटर कॉलेज जंगल धूषण व गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ जंगल तिनकोनिया की तरफ से व्यास मुनि मिश्र ,महाराणा प्रताप पॉलिटेक्निक से श्री पाटेश्वरी सिंह,महाराणा प्रताप जूनियर हाईस्कूल लाल डीग्गी से गोपाल कुमार वर्मा, प्रताप आश्रम गोलघर से संजय कुमार श्रीवास्तव, महाराणा प्रताप मीराबाई महिला छात्रावास सिविल लाइन से दुलारमति सिंह, महायोगी गोरखनाथ योग संस्थान व महायोगी गोरखनाथ गौ सेवा केंद्र की तरफ से योगी सोमनाथ, दिग्विजय नाथ इंटर कॉलेज चैक माफी की तरफ से आशुतोष कुमार त्रिपाठी, महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र चैक माफी से डॉ संदीप सिंह ,गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ पीपीगंज की तरफ से कुलदीप तिवारी ,गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ महाविद्यालय चैक बाजार महाराजगंज, दिग्विजयनाथ इंटर कॉलेज चैक बाजार महाराजगंज, दिग्विजयनाथ संबद्ध प्राइमरी स्कूल महाराजगंज व दिग्विजयनाथ पूर्व माध्यमिक बालिका विद्यालय चैक बाजार महाराजगंज से श्री रमेश कुमार उपाध्याय तथा महंत दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय गोरखपुर से डॉ डी पी सिंह श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

महाराणा प्रताप बालिका इंटर कॉलेज सिविल लाइन गोरखपुर के छात्राओं ने सरस्वती वंदना एवं श्रद्धांजलि गीत प्रस्तुत किया। वैदिक मंगलाचरण डॉ रंगनाथ त्रिपाठी, गोरक्षाष्टक पाठ सुजल तिवारी व गौरव तिवारी दिग्विजयस्त्रोत पाठ डॉ अभिषेक पांडे, अतिथियों का स्वागत कुलपति प्रोफेसर उदय प्रताप सिंह तथा संचालन डॉ श्रीभगवान सिंह द्वारा किया।

मंच पर महंत सुरेशदास जी महाराज ,योगी चेताईनाथ जी महाराज ,जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज, जगतगुरु स्वामी राम दिनेशाचार्य जी ,महंत अवधेशदास जी ,महंत मिथलेशनाथ उपस्थित रहे।